



ढोंगी लडैया

एक बुंदेलखंडी लोककथा



एकलव्य



मनोज साहू 'निडर'

चित्र: कैरान हेडाक

एक लड़ैया थो। बो दिन भर
इतै-उतै घूमत -फिरत थो।

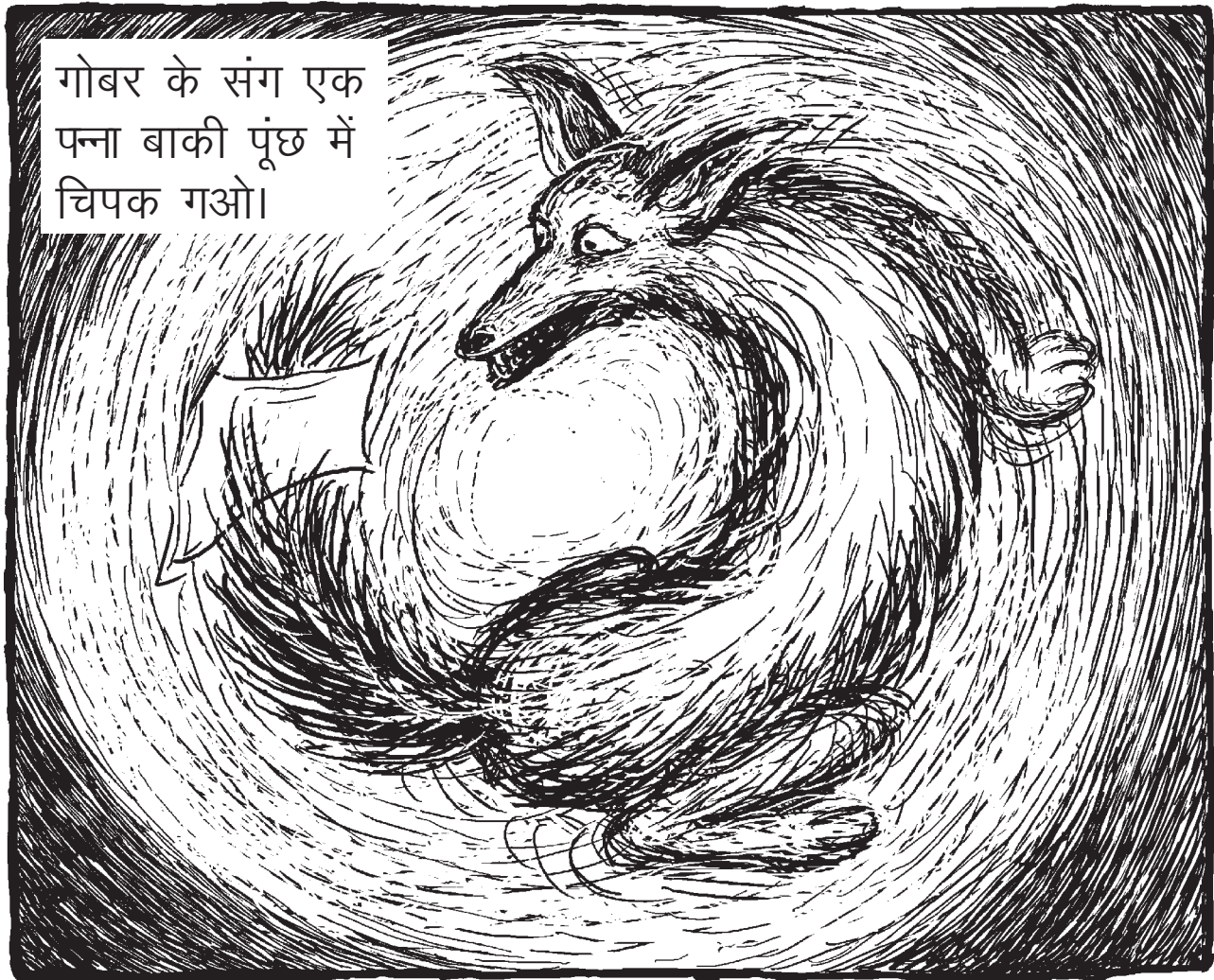


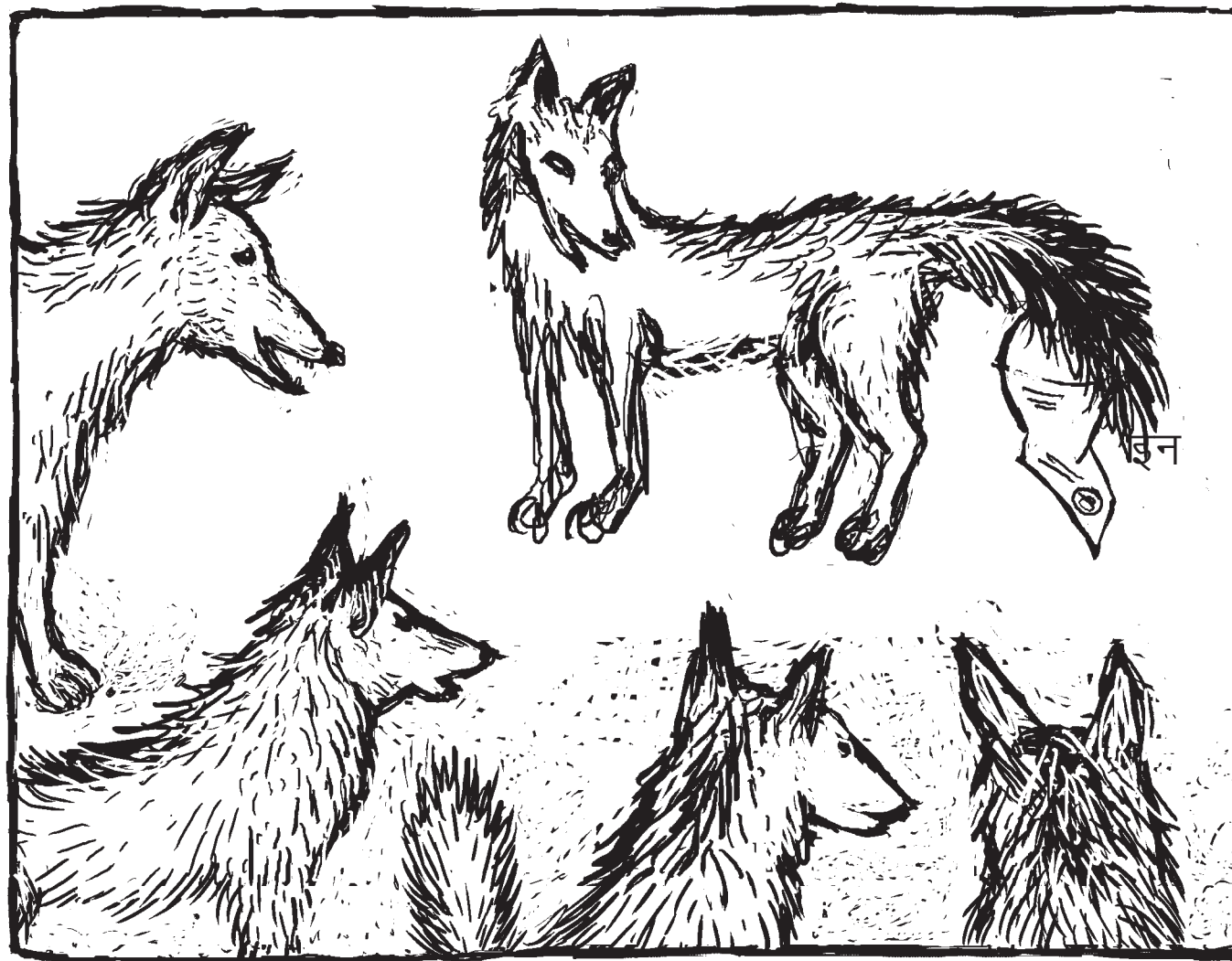


एक दिना बो घूमत-घामत
गांव में भरा गओ और एक
घड़े पे बैठ गओ। घूडे पे कछू
गोबर पड़ो थो और कछू
किताब के पन्ना डरे थे।



गोबर के संग एक
पन्ना बाकी पूंछ में
चिपक गओ।







लड़ैया भगत-भगत अपने दूसरे
गोइयों के पास पोंचो। पूंछ में पन्ना
चिपको देख के एक ने कई, “काय
भैया जो तेरी पूंछ में का फंस रओ
है।”

जा सुन के लड़ैया कछू अकड़ के
बोलो, “अरे! जो तो मेरी सरपंची
को पट्टो है, आज से मैं तुमरो
सरपंच हूँ। अब हम कहीं भी
बेखटका आ-जा सकत हैं, अब
तुमसे कोउ कछू नई कै हैं।”

जा सुनके सबरे लड़ैया भोत खुस
भये। उनने सरपंची को परसाद
बांट दओ।



प्रपंच



अब तो नए सरपंच जू जितै
से भी निकरें, उन्हे देख के
सब कोई राम-राम करवे के
लाने खड़े हो जात। जो देख
के लड़ैया भैया फुलंदी में
आ गये।

एक लड़ैया बोलो - “सरपंच जू तुम में और हम में कोई फरक नई है, सो कछु ऐसो उपाय करो के तुमाई अलग पहचान हो जावे और हम दूर सेई चीन्ह लेवें के सरपंच जू चले आ रये हैं।”



जा बात सरपंच जू हे जम गई।





फिर सब पंचों ने
विचार करके एक
तीन चार हाथ को
डंडा सरपंच जू की
पूंछ से बाँध दओ।

जा देख के लड़ैया दाउ जू फूल के कुप्पा हो गये। अब तो
बे जितै से भी निकरें खड़ खड़ की आबाज आन लगे।
आबाज सुनके सब लड़ैया खड़े होके राम-राम करन लगे।
ऐसई दिन बीतत रये।



एक दिना कछु लड़ैया जुड़
गये और सरपंच जू से बोले,
“दद्दा आज हमरो मन
गांव में घूमवे को हो रओ
है, तनक हमें गांव की सैर
तो करा लाओ।” जा सुनके
लड़ैया भैया कछु सुटपुटान
से लगे।

जा देख के एक ने कई,
“दद्दा, अब काय डिरा
रये हो, अब तो अपने पास
पट्टो लिखो धरो है।” जा
सुन के लड़ैया भैया कछू
नई बोले और मन मार के
उनके संग लग लए।

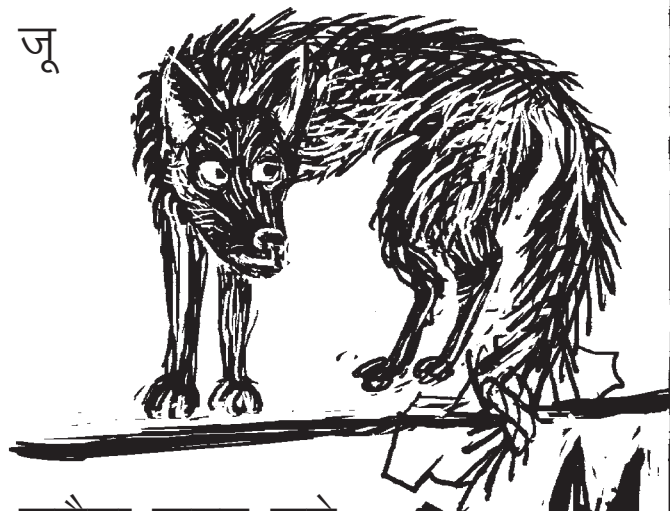




जब सबरो झुंड गांव के बगल में
पोंचों तो उन्हें देख के गांव के
कुत्ता एक जिंघा जुड़ के भौंकन
लगे।



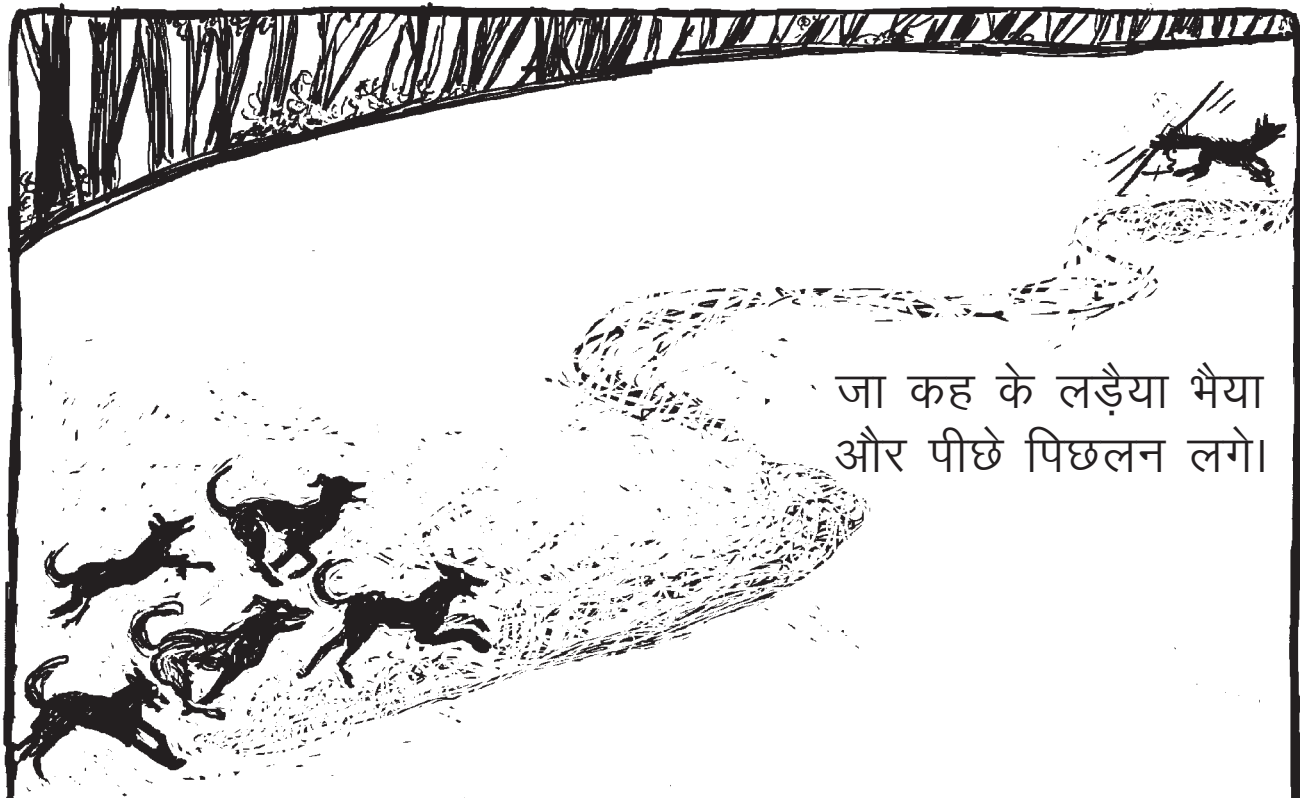
कुत्तों खों भौंकत देख सरपंच जू
पीछे पिछलन लगे।



जा देख के सबरे लड़ैया कहन लगे,
“दद्दा डिरा काय रये हो, अपनो
पट्टो दिखा दो।”

सरपंच जू रुआंसे होके बोले, “अब
जे गंवारों खों का पट्टा दिखाओ, जे
का पढे-लिखे हैं? इनके मां लगवे को
का कोई फायदा नई।”



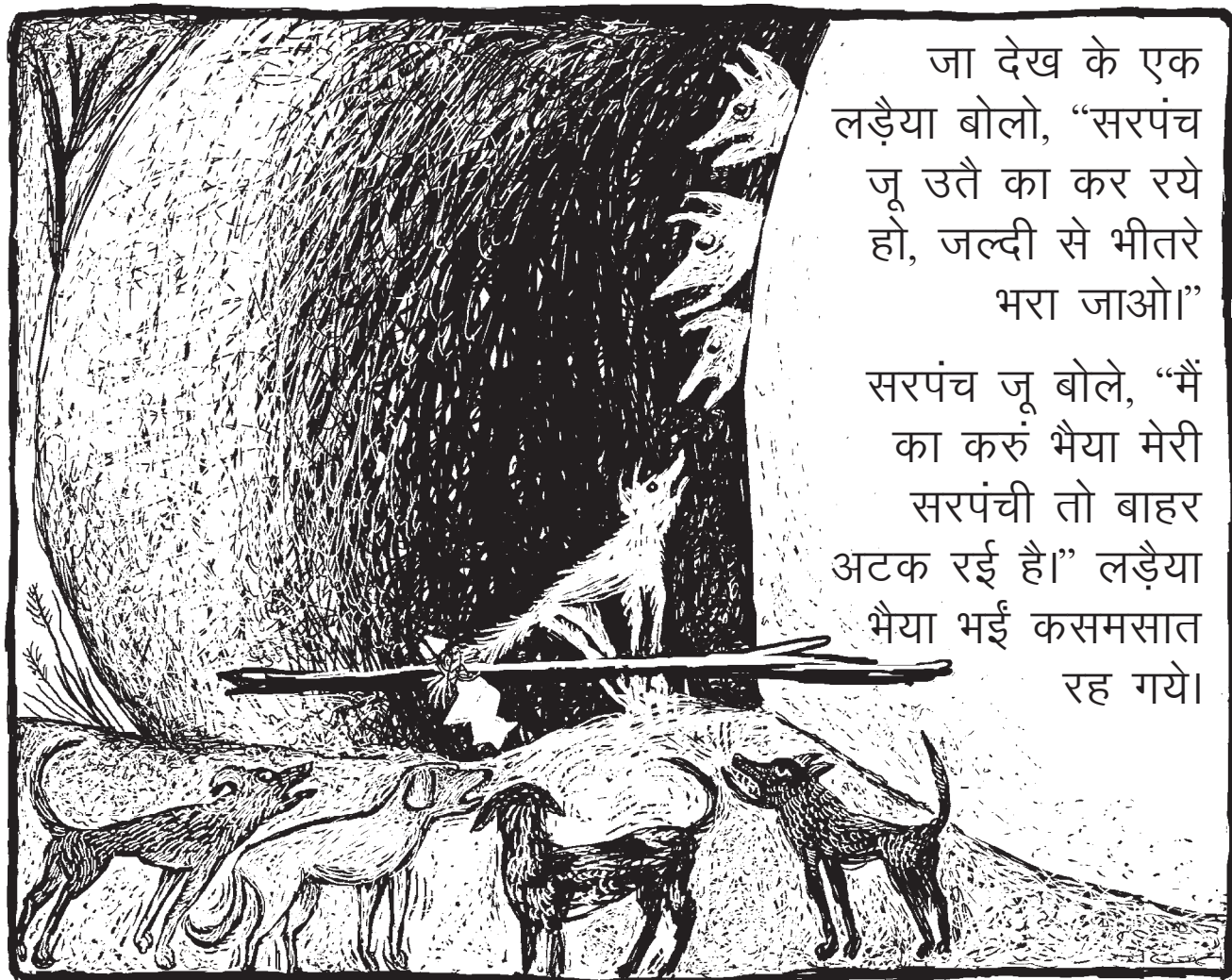


जा कह के लड़ैया भैया
और पीछे पिछलन लगे।

उनके पीछे सबरे लड़ैया भगन लगे। पीछे से कुत्ता भी
दौड़ पड़े। सबरे लड़ैया दौड़ के मांद में भरा गए, मनो
सरपंच जू कछु पीछे रह गये।

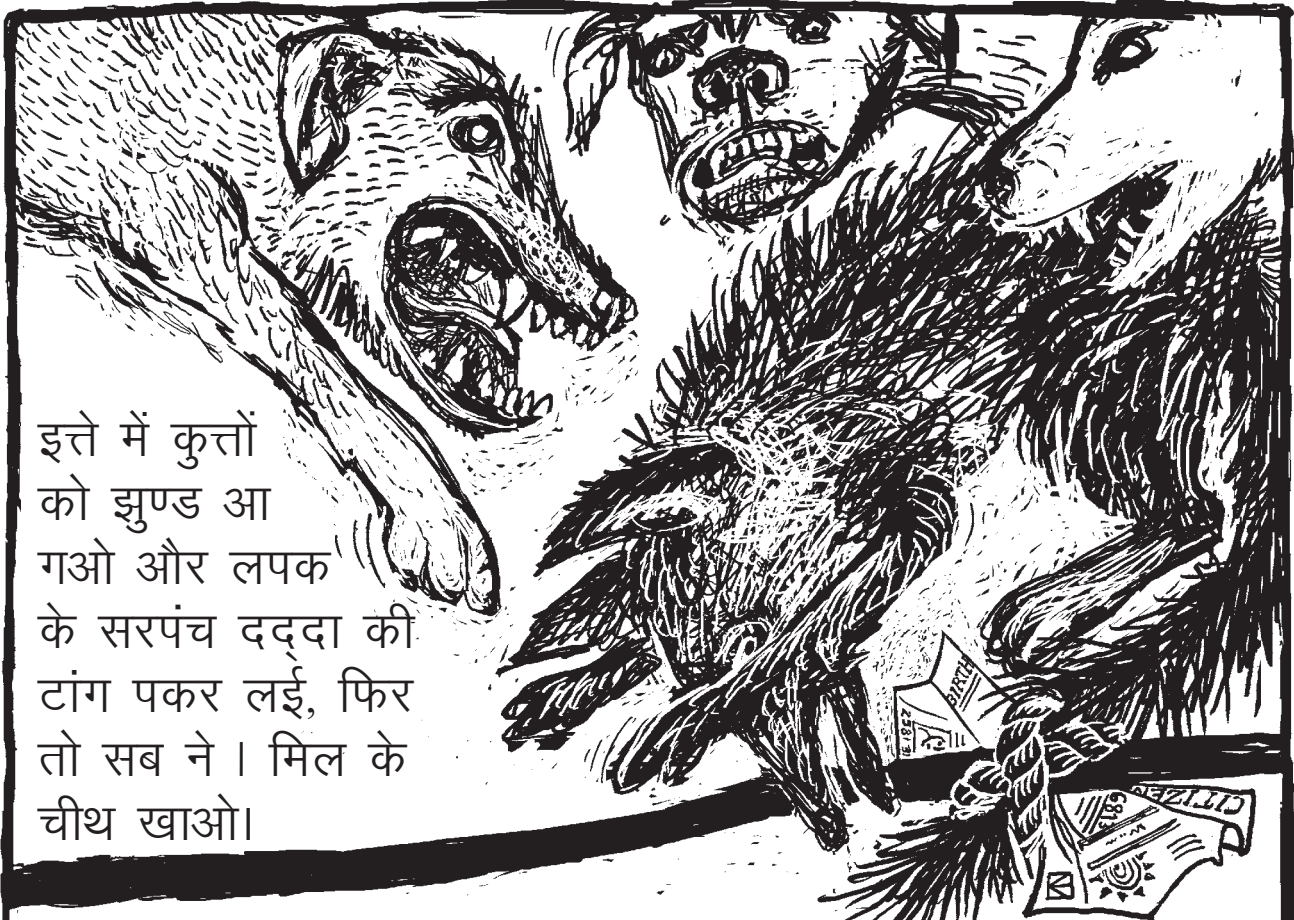
उनकी पूंछ से बंधो डंडा अड़
गओ; उनने खूब दम लगाई मनो
वे भीतर नई भरा पाये।





जा देख के एक
लड़ैया बोलो, “सरपंच
जू उतै का कर रये
हो, जल्दी से भीतरे
भरा जाओ।”

सरपंच जू बोले, “मैं
का करूं भैया मेरी
सरपंची तो बाहर
अटक रई है।” लड़ैया
भैया भई कसमसात
रह गये।



इते में कुत्तों
को झुण्ड आ
गओ और लपक'
के सरपंच दददा की
टांग पकर लई, फिर
तो सब ने। मिल के
चीथ खाओ।

बाकी सबरे लडैया डिरा के भंई चिमा गये। किरस्सा हती खतमा।

Published by Eklavya, Bhopal, 2020
www.eklavya.in / books@eklavya.in
ISBN: 978-93-87926-46-2